शोध मंथन Vol. XIV No.I Jan.-Mar.2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

विश्व की महान मन्दी : एक अध्ययन

प्राप्तिः 15.02.2023
स्वीकृतः 16.03.2023

मनीष कुमार
एम०ए०, अर्थशास्त्र
ईमेलः *manish8279899961@gmail.com*

16

यदि आप अर्थशास्त्र को समझना चाहते हैं, तो अमेरिका और विश्व अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित करने वाली सबसे बडी आपदा का अध्ययन करें।

बेन एस० बर्नान्के (2022 अर्थशास्त्र नोबेल विजेता)

सारांश

वर्तमान में आर्थिक व सामाजिक जगत में मंदी शब्द काफी चर्चा में है। मंदी, विभिन्न उत्पादकीय गतिविधियों में संकुचन तथा सरकार व केन्द्रीय बैंको की अकुशल नीति का परिणाम होती है। प्रस्तुत शोध पत्र में अमेरिका से शुरु हुई 1930 की विश्वव्यापी मन्दी का विश्लेषण किया है। इसका अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि किस प्रकार उदासीन निर्णयों और अहस्तक्षेप नीति से समृद्धि शाली आर्थिक प्रणाली भी आपदा में बदल जाती है। मंदी का अध्ययन समष्टि अर्थशास्त्र के एक विशिष्ट क्षेत्र होने के साथ–साथ यह अन्य मानविकी विषयों के लिए भी महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन महान मंदी की जड़ों से प्रारम्भ होकर उसकी सुधार नीतियों का भी अवलोकन करता है। यह विशेष रूप से इस प्रश्न पर प्रकाश डालता है कि नीति निर्माता मंदी को रोकने हेतु इतने धीमे क्यों थे? इसमें सुधार कब और कैसे हुए?

मुख्य बिन्दु

महामन्दी, स्वर्णमान, स्टॉक मार्किट, फेडरल रिजर्व बैंक, मुद्रा आपूर्ति, बैंक विफलता।

शोध के उद्देश्य

1. आर्थिक महामंदी की ऐतिहासिक स्थिति को प्रस्तुत करना।
2. अज्ञात अध्ययनकर्ताओं को इस मंदी से परिचित कराना।
3. महामंदी पर विभिन्न आर्थिक विचारधाराओं का अध्ययन करना।
4. महामंदी के कारण एवं प्रभावों को जानना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक एवं द्वितीयक समकों पर आधारित है। प्राथमिक समकों के लिए विभिन्न ऑनलाइन साक्षात्कारों का उपयोग किया गया है। द्वितीयक संमको के अन्तर्गत राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रों, फेडरल रिजर्व बैंक की वेबसाइट, आर्थिक व सामाजिक पुस्तकों व इंटरनेट का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तावना

सकल घरेलू उत्पाद (GDP) अर्थव्यवस्था की सेहत का मापक माना जाता है और इसमें होने वाले उच्चावचन व्यापार चक्र की समृद्धि, पुनरूत्थान, मन्दी व अवसाद आदि अवस्थाओं को दर्शाते हैं। व्यवहार में आर्थिक जगत में स्लोडाउन, रिसेशन व डिप्रेशन जैसी गतिविधियों को एक दूसरे के पूरक के रूप में प्रयोग किया जाता है परन्तु सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से इन सभी की अलग अलग परिभाषाएँ हैं जो इस प्रकार हैं– अंग्रेजी शब्द रेशेसन (Recession) को हिन्दी में अवमन्दन कहा जाता है जो मूल रूप से भौतिक विज्ञान के 'मन्दन' शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ गति में कमी से होता है। इस प्रकार जब माँग में कमी हो तथा वास्तविक उत्पादन बढ़ नहीं रहा हो तथा बेरोजगारी बढ़ रही हो और जीडीपी में लगातार दो तिमाहियों (6 माह) में गिरावट देखी जाए तो इसे अवमन्दन या सुस्ती कहते हैं। यह अवस्था अर्थव्यवस्था के कुछ क्षेत्रों तक सीमित रहती है। जब अवमन्दन के कारणों तथा प्रभावों कों मौद्रिक तथा राजकोशीय स्तर पर नियंत्रित ना किया जाए तो यह व्यापक होकर अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों को अपने चपेट में ले लेता है जिसके परिणामस्वरूप चारों ओर बेरोजगारी तथा उत्पादन क्षमता निष्क्रिय हो जाती है। इसे ही मन्दी या डिप्रेशन कहा जाता है। जब यह आर्थिक झंझावात लम्बी समयावधि तक विघमान रहता है तो इसको महामंदी अर्थात ग्रेट डिप्रेशन के नाम से जाना जाता है।

विश्वव्यापी आर्थिक संकट का इतिहास

जब हम विश्व के आर्थिक इतिहास पर दृष्टिपात करते हैं तो हमें पता चलता कि विभिन्न समयावधियों में अनेक वित्तीय संकटों, 1930 की महान मन्दी, 1956 का स्वेज संकट, अंतर्राष्ट्रीय ऋण संकट 1997–2001, रुसी आर्थिक संकट 1992–1997, मेक्सिको ब्राजील और अर्जेन्टिना में लैटिन अमेरिकी ऋण संकट 1994–2002 और वैश्विक आर्थिक अपगमन 2007–09 आदि ने वैश्विक आर्थिक व्यवस्थाओं को प्रभावित किया है।

महामंदी 1930 को अमेरिका में गृहयुद्ध के बाद का दूसरा सबसे बड़ा ऐतिहासिक संकट माना जाता है। यह विश्व के आधुनिक आर्थिक जगत में सबसे बड़ी और सर्वाधिक महत्व की मंदी थी। आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, बैंकिंग आदि सभी क्षेत्रों पर इसका प्रभाव पड़ा।

1920 से 1929 तक का कालखण्ड अमेरिका का 'समृद्धि युग' माना जाता है। 1920 से 1929 तक का दशक अमेरिका का 'समृद्धि काल' था। इन 10 वर्षों में नये आवास निर्माण व बिक्री, घरेलु फर्नीचर, उपकरणें और वाहन खरीदने वाले अमेरिकियों की संख्या काफी तेजी से बढ़ी। इस कालखण्ड को 'ऑटोमोबाइल का युग' तथा 'दहाड़ता हुआ बीसा (Roaring twenties) कहा गया। शहर और कस्बे तीव्र गति से विकसित हो रहे थे। राज्य और स्थानीय सरकारें, सड़कें, शुद्ध पेयजल, सीवर लाइन, बिजली, टेलिफोन, पक्के फुटपाथ, जैसी मूलभूत सुविधाओं पर भारी व्यय कर रहीं थीं। इस समय वहाँ उपभोक्तावाद अपने चरम पर था। अर्थव्यवस्था में जिन भी वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन हो रहा था वो काफी तेजी से बिक रहा था क्योंकि माँग बहुत ज्यादा थी। निवेशकों और राज्य व स्थानीय सरकारों द्वारा व्यावसायिक फर्मों में किए गए व्यय से उच्च भुगतान वाली नौकरियों के अवसर विद्यमान थे।

अब 1920 के दशक के अंत में आवास व वाहन खरीद के लिए माँग कम होने लगी थी। शहरों और कस्बों के विकास पर किए जा रहे योजनागत व्यय की अवधि समाप्त हो रही थी। 1929

की गर्मियों के शुरू में, अर्थव्यवस्था के कुल व्यय में कमी आ रही थी और व्यावसायिक फर्मों ने उत्पादन में कटौती शुरू कर दी तथा श्रमिकों की छटनी की जाने लगी थी। अर्थवस्था मन्दी की ओर अग्रसर होने लगी। अर्थविद् मानकर चल रहे थे कि कुछ समय बाद सब कुछ सही हो जाएगा परन्तु ऐसा नहीं हुआ। अगस्त 1929 में मन्दी, अवसाद अर्थात डिप्रेशन में पहुँच गई थी। कंपनियाँ दिवालिया हो चुकी थीं और, बिना बिके माल का असीमित स्टॉक उपलब्ध था, बेरोजगारी फैल रही थी, लोगों ने बैंकों के कर्ज चुकाने बंद कर दिए जिससे बैंकों के पास लोन देने की शक्ति कम हो गयी, ऋण मिलने बंद हो गए और जिन लोगों का धन बैंकों में जमा था उन्होनें भी उसे निकालना शुरू कर दिया जिसके संयुक्त प्रभाव से बैंकिंग ढाँचा चरमरा गया। लगभग 9000 बैंकों का विघटन हो चुका था। जनता में यह अविश्वास फैल गया कि आने वाले समय में शेयरों की कीमतें गिरने वाली हैं परिणाम स्वरूप अक्टूबर 1929 में शेयर बाजार क्रेश हो गया। बेरोजगारी ने विकराल रूप धारण कर लिया बेरोजगारी की जो दर 1929 में 3.2% थी अब वो 1933 में लगभग 25% हो चुकी थी। इस महामन्दी का प्रभाव बाह्य देशों पर भी पड़ रहा था। 1930 के कृषि संकट ने इस मंदी को ओर भी भयावह बना दिया था। 1929 के आरम्भ और 1933 की चरम सीमा के बीच अमेरिका में औधोगिक उत्पादन 47% घट गया और वास्तविक राष्ट्रीय उत्पादन में 30% की गिरावट दर्ज की गई। ऐसे समय में अमेरिका के तत्कालीन 31 वें राष्ट्रपति हरबर्ट हूवर ने निराश्रित एवं बेरोजगार लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि "Prosperity is just around the cornor" अर्थात समृद्धि जल्दी आने वाली है। उनका यह वाक्यांश आशा के अलावा कुछ नहीं था क्योंकि वो मानकर चल रहे थे कि अर्थव्यवस्था स्वचालित है, आने वाले समय में अपने आप सब कुछ सही हो जाएगा परन्तु ये सत्य नहीं था।

महामंदी के कारण

इस व्यापक मंदी के पीछे अनेक घटकों का योगदान था, इन सभी की व्याख्या करना कठिन कार्य है अतः यहाँ कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं–

1– वॉल स्ट्रीट संकट

इसे शेयर बाजार संकट के नाम से जाना भी जाता है। वॉल स्ट्रीट अमेरिका का एक मार्ग है जो लोवर मैनहट्टन, न्यूयॉर्क, में स्थित है। यहीं पर ही विश्व के दो सबसे बड़े शेयर बाजार न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज और NASDAQ का मुख्यालय स्थित है। इस स्थान को अमेरिकी वित्तीय प्रणाली का केंद्र कहा जाता है। ग्रेट डिप्रेशन में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

जब अर्थव्यवस्था में अधिक माँग, पूर्ण रोजगार और GDP में तीव्र गति से वृद्धि होती है तो लोगों का शेयर मार्किट में अधिक विश्वास होता है यही 1920 के दशक के अमेरिका में हो रहा था। एक विचारधारा पनप रही थी कि अधिक धनी होना है तो शेयर बाजार में निवेश करो। असंगठित क्षेत्र के लोग भी शेयर के क्रय–विक्रय से अपने धन को दुगुना कर रहे थे। लोग बैंकों से ऋण लेकर शेयर बाजार में निवेश कर रहे थे। 1921 से शेयर की कीमतें बढ़ रहीं थीं। अमेरिकी अर्थशास्त्री जॉन केथल (पूर्व भारतीय राजदूत) के अनुसार 1929 में 10 लाख से ज्यादा लोग प्रति दिन पूरे समय केवल सट्टाबाजी करते थे। 1927 और 1928 इन दो वर्षों के बीच शेयरों की कीमतें दुगुना हो चुकी थी और शेयर अधिमूल्यित (over valued) हो गए थे। इसी समय अचानक अमेरिकी केंद्रीय बैंक 'फेडरल

रिजर्ब बैंक' ने ऋण हेतु ब्याज दरों में वृद्धि कर दी परिणामस्वरूप विनिर्माण लागत बढ़ी जिससे कीमतों में वृद्धि हुई और माँग में कमी होने लगी। लोगों में यह संदेश फैल गया कि आने वाले समय में शेयरों की कीमतें गिरने वाली हैं।

18 अक्टूबर 1929, को बाजार में शेयरों की कीमतों में गिरावट का दौर शुरू हुआ सभी लोग अपने शेयर बेचकर नकदी प्राप्त करना चाहते थे।

24 अक्टूबर, बृहस्पतिवार को वॉल स्ट्रीट में 13 मिलियन अर्थात 130 लाख शेयर बेचे गए, इस दिन को "Black Thursday" कहा जाता है।

29 अक्टूबर, मंगलवार को बाजार खुलते ही 16 मिलियन अर्थात् 160 लाख से अधिक शेयरों की बिक्री हुई इसे Black Tuesday के नाम से जाना जाता है। इस प्रकार पाँच दिनों के अन्तर्गत अमेरिका का शेयर बाजार 30% समाप्त हो गया। ऋण के अधिक भारस्वरूप निवेशकों की आत्महत्या जैसी घटनाएँ भी सामने आने लगी थीं।

इस संकट से लोगों में भविष्य की आय के प्रति काफी अनिश्चितता उत्पन्न हो गयी थी। कुल माँग और कुल व्यय में कमी के चलते व्यापार और निवेश तेजी से कम हो रहे थे। इस प्रकार मंदी महामंदी में परिवर्तित होने लगी।

2– बैंकिंग संकट और मौद्रिक संकुचन

1920 के दशक में मुद्रा आपूर्ति और वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में लगातार वृद्धि हो रही थी। 1930 में अमेरिका में लगभग 24000 वाणिज्यिक बैंक थे जिसमें से 8000 बैंक फेडरल रिजर्व बैंक प्रणली से सम्बन्धित थे और 16000 स्वतन्त्र। इन गैर सदस्य बैंकों की स्थापना 1913 में स्थापित फेडरल रिजर्व बैंक से पहले हुई थी इसलिए इनकी नीति अलग थी। ये बैंक उदार व्याज दर पर अधिक ऋण प्रदान कर रहे थे। अर्थव्यवस्था 1929 के शेयर बाजार संकट से जल्द उभर सकती थी परन्तु बैंकों के पतन ने इसे पुनः मन्दी के दलदल में धकेल दिया। अमेरिका बैंकिंग संकट को चार चरणों में जाना जाता है। बैंकिंग संकट तब उत्पन्न होता है जब बैंक अपनी शोधन क्षमता खो देते हैं। जमाकर्त्ता बैंकों से अपनी माँग जमा राशि को नकदी के रूप में प्राप्त करना चाहते हैं परन्तु बैंक ऐसा करने में असमर्थ होते हैं। अमेरिका में बैंकिंग संकट की चार लहरों ने समग्र अर्थव्यवस्था को मंदी के गर्त में पहुँचा दिया था।

प्रथम लहर जो अक्टूबर 1930 में एक घबराहट के साथ उत्पन्न हुई वह मार्च 1931 में लगभग 300 बैंकों के पतन के साथ समाप्त हुई। दक्षिण और मध्य अमेरिका में एक अफवाह फैली कि बैंक दिवालिया होने वाले हैं और लोग बैंकों से अपना पैसा निकाल लें। यह अफवाह बैंकिंग प्रणाली से जुड़े निवेशकों व व्यापारियों के माध्यम से दिसबर 1930 तक सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में फैल गयी और भय का एक वातावरण उत्पन्न हो गया। सभी लोग नकदी प्राप्त करने के लिए बैंकों में जुट गए फलस्वरूप बैंकों को ऋण योजनाओं को बंद करना पड़ा और तरलता की समस्या उत्पन्न हो गयी।

दूसरी लहर मार्च 1931 से जून 1931 तक चली। यह पहली लहर के ही समान थी, लेकिन बैंको की पूँजी संरचना में कमी ने इसके प्रभाव को अधिक गंभीर बना दिया था।

तीसरी लहर सितम्बर 1931 को ब्रिटेन के स्वर्ण मानक से विचलन के साथ शुरू हुई। इससे अमेरिका के धन की बाहय निकासी अधिक हुई परिणामस्वरूप मुद्रा पूर्ति अधिक संकुचित हो गई।

चौथी लहर 1932 में शुरू हुई जो 6 मार्च 1933 को राष्ट्रपति फ्रेंकलिन डी रूजवेल्ट द्वारा घोषित 'राष्ट्रीय बैंक अवकाश' के साथ समाप्त हुई।

3– अति उत्पादन और क्रय शक्ति में कमी

1920 के दशक में उत्पादन में निरंतर वृद्धि होती गयी और दूसरी तरफ रोजगार में कमी। बेरोजगारी में वृद्धि से लोगों में विशेषकर श्रमिकों की क्रय शक्ति में जबरतस्त गिरावट आ गयी। प्रतिस्पर्धा के भयंकर कुचक्र में वस्तुओं का उत्पादन इतनी अधिक मात्रा में हुआ कि सारे गोदाम भर गए। माँग और पूर्ति का सन्तुलन समाप्त हो गया था क्योंकि पूर्ति की मात्रा माँग से अधिक थी इसलिए नया उत्पादन संभव नहीं था। निवेशक एवं व्यापारियों की पूँजी माल में फॅसी हुई थी। अतः कारखानों में मजदूरों की छँटनी की जाने लगी और स्टॉक माल को कम मूल्यों पर बेचने का प्रयास किया गया जिससे आर्थिक मंदी को बल मिला। जैसे जैसे क्रय शक्ति में कमी आती गई वैसे वैसे आर्थिक मंदी भी ग्रेट डिप्रेशन में बदलने लगी। बाजार तथा गोदाम निर्मित एवं कच्चे माल से भरे थे परन्तु लोगों और व्यापारियों के पास खरीदने हेतु पैसे नहीं थे।

4– औधोगिकरण और बेरोजगारी

अर्थशास्त्रियों के अनुसार, '1917 तक अमेरिका की पहचान एक बड़े औधोगिक निर्माता राष्ट्र एवं विश्व के सबसे धनी देश के रुप में हो चुकी थी।' अमेरिका के प्रचुर प्राकृतिक साधनों के अद्वितीय भण्डारों– ''लोहा, ताँबा, कोयला, पेट्रोलियम, सोना और कई खनिजों की उपलब्धता के साथ उपजाऊ कृषि योग्य भूमि आदि ने तीव्र औधोगिकरण के लिए सुदृढ़ आधार तैयार किया। औधोगिक क्षेत्र में नये नये अविष्कारों से जहाँ एक ओर प्रौधोगिकी विकास को बल मिला वहीं दूसरी ओर उत्पादन में तीव्र वृद्धि तथा उत्पादन लागतों में कमी से औधोगिक उत्पादों के मूल्यों में कमी हुई जिससे उनके उपभोग में भी तेजी सें वृद्धि हुई। इन आविष्कारों की प्रवृत्ति इतनी प्रबल थी कि 1930 में पंजीकृत पेटेन्टों की संख्या 4 लाख 23 हजार हो गयी थी। जनसंख्या वृद्धि से श्रमिकों की आपूर्ति में वृद्धि हुई परन्तु मशीनों एवं यन्त्रों की सहायता से उत्पादन होने के कारण उन्हें रोजगार नहीं मिला। रोजगार में कमी से उपभोग मांग में कमी होने लगी जिससे उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पडा।

5– स्वर्णमान का पतन

विश्व युद्ध के पहले अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से स्वर्ण मान सुचारू रूप से चल रहा था। बाद में यह केंद्रीय बैंकों पर निर्भर हो गया। प्रारम्भ में केंद्रीय बैंकों के बीच उच्च स्तर का सहयोग था। 1928 में इसमें कमी हुई जब फेडरल रिजर्व बैंक ने स्वर्ण के बहिर्वाह के डर तथा इक्विसवी के प्रभाव को रोकने के लिए सकुंचनकारी मौद्रिक नीति का प्रयोग किया। इसके प्रभाव अमेरिकी अर्थव्यवस्था तक ही सीमित नहीं रहे वरन् स्वर्ण मानक के माध्यम से विश्व भर में प्रसारित हुए। व्याज की दरों में वृद्धि तथा विदेशी उधारी को प्रतिबंधित करके ऋणी देशों पर दबाव डाला गया कि इन देशों को भी ऋण चुकाने हेतु अपनी मौद्रिक नीति में संकुचन करना होगा। विभिन्न देशों ने मंदी की स्थिति को देखते हुए ऐसा नहीं किया ओर अतंतः स्वर्णमान को छोड़ना शुरू कर दिया जिससे अमेरिकी निर्यात में कमी आई और मंदी का विस्तार हुआ।

6– संरक्षणवादी आर्थिक नीति

1929 की मंदी की लहर से प्रभावित कृषि वस्तुओं, एवं अन्य उधोंगों को विदेशी आयातित

वस्तुओं के साथ प्रतिस्पर्धा से बचाने के लिए प्रशुल्क नीति उपयोग में लायी गयी। सीनेटर स्मूट और कांग्रेसी हॉली ने 1930 में स्मूट हॉली टैरिफ नामक प्रशुल्क लगाने का प्रस्ताव सदन में प्रस्तुत किया। मई 1930 की शुरूआत में 1028 प्रमुख अमेरिकी अर्थशास्त्रियों ने राष्ट्रपति को लिखित पत्र में आग्रह किया इसे लागू ना करें क्योंकि ये मंदी को अवसाद में बदल देगा। उन्होंने तर्क दिया कि इससे निर्यात में कमी आएगी क्योंकि जब तक हम देशों को आयात की अनुमति नहीं देंगे तब तक वो हमारे निर्यात को नहीं खरीदेंगे। 17 जून, 1930 को स्मूट हॉले टैरिफ लागू किया गया। इस प्रशुल्क ने कुल प्रशुल्क को 20% बढ़ा दिया परिणामस्वरूप अन्य देशों ने भी अमेरिका के निर्यातों पर प्रतिकारी रूप से उच्च प्रशुल्क लगाया जिससे अमेरिकी निर्यात 1929 में 7 बिलियन डॉलर से गिरकर 1932 में 2.5 बिलियन डॉलर हो गया। 1933 तक कृषि निर्यात 1929 के स्तर से एक तिहाई कम हो गया। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार 65% घ्रट गया।

निष्कर्ष

इस प्रकार मौद्रिक और अमौद्रिक कारणों की श्रंखला ने मंदी को विश्वव्यापी मन्दी में बदला। 1936 में केन्स ने बताया कि यह मुख्य रूप से कुल माँग में कमी के कारण हुआ था। माँग के सन्तुलित स्तर को पुनः भारी यात्रा में सार्वजनिक व्यय से ही प्राप्त किया जा सकता था। शिकागो विश्वविधालय के अर्थशास्त्री मिल्टन फ्रिडमैन और शोघकर्ता अन्ना श्वार्टज् ने 1963 में अपनी पुस्तक "Monetary History of the United States" में बताया की मंदी का महामंदी में बदलना, फेडरल रिजर्व बैंक द्वारा बैंक विफलताओं को रोकना में नाकामी तथा मुद्रा आपूर्ति की कमी को दूर नहीं करने का परिणाम था। बैरी आइचेंग्रीन और हेरोल्ड जेम्स ने 1992 में अपने शोध में बताया कि फेडरल रिजर्व बैंक की स्वर्णमान के नियमों के पालन की बाध्यता ने मंदी के प्रभावों को गंभीर बना दिया था। 1933 में नव निर्वाचित राष्ट्रपति फ्रेंकलिन डी रूलवेल्ट ने मंदी को सुधारने के लिए न्यू डील; कार्यक्रम को अपनाया। औधोगिक क्षेत्र के पुनरुत्थान हेतु राष्ट्रीय उधोग पुनरूत्थान अधिनियम, मुद्रा आपूर्ति का प्रसार, 1936 में कृषि समयोजन अधिनियम आदि सुधार होने के फलस्वरूप अर्थव्यवस्था में पुन्रुत्थान की प्रक्रिया शुरू हुई।

सन्दर्भ

1. लाल, एस०एन०. (2021). भारतीय अर्थव्यवस्था सर्वेक्षण तथा विश्लेषण. शिवम् प्रकाशकः प्रयागराज।
2. सिहं, डॉ० एस०आर०. (2013). कीन्स का अर्थशास्त्र. पटना बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. नवम्बर.
3. कुमार, अशोक. (2022). समकालीन विश्वः मुद्दे एवं चुनौतियॉ आर्थिक मंदी।
4. Romer, Christina D. (2003). Forthcoming in the encyclopedia Britannica. 20 December.
5. Time period; The Great depression. httpsý£//www.federalreservehistory.org.
6. egkeanh¼1929&1939½,https://www.drishtiias.com.